5

यीशु की वापसी

पिता के पास यीशु के ऊपर उठाए जाने के दिन से ही, मसीही लोग उसकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस घटना के आकर्षण पर विचार करते और इसके बारे में अपर्याप्त सी जानकारी होने के कारण, शायद यह आश्चर्यजनक नहीं है कि यीशु के द्वितीय आगमन के बारे में इतने विचार पाए जाते हैं। इस और अगले पाठ में, हम सीखेंगे कि उसकी वापसी के बारे में बाइबल क्या कहती है और दूसरे विचारों को देखेंगे जिनकी शिक्षा दी जाती है।

उसकी वापसी का तथ्य

यद्यपि ''द्वितीय आगमन'' और ''दूसरी आमद'' वाक्यांश पवित्र शास्त्र में नहीं मिलते हैं, पर ''फिर आकर'' (यूहन्ना 14:3) और ''दूसरी बार'' दिखाई देने (इब्रानियों 9:28) से यही संकेत मिलता है। यीशु के द्वितीय आगमन के लिए विभिन्न यूनानी शब्दों का इस्तेमाल किया गया है।

Apokalupsis का इस्तेमाल कई बार यीशु की वापसी के लिए किया जाता है, जिसका अनुवाद ''प्रगट होने'' (1 कुरिन्थियों 1:7), ''प्रगट'' और ''प्रगट होगा'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:7; 1 पतरस 1:13; 4:13) और ''प्रगट होने'' (1 पतरस 1:7) हुआ है। पृथ्वी पर रहते हुए यीशु मानवीय देह में दिखाई दिया था, पर उसका सम्पूर्ण, ईश्वरीय स्वभाव प्रगट नहीं हुआ था। परन्तु जब वह दोबारा आएगा, तो उसकी ईश्वरीय महिमा प्रगट होगी (यू.: *phaneroo,* जिसका अर्थ ''प्रगट हुआ'' है; कुलुस्सियों 3:4)।

Epiphania का अनुवाद ''आना'' या ''प्रगट होना'' हुआ है और इसका इस्तेमाल केवल यीशु के दोबारा आने के सम्बन्ध में किया जाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:8; 1 तीमुथियुस 6:14; 2 तीमुथियुस 1:10; 4:1, 8; तीतुस 2:13)।

Parousia वह शब्द है, जिसका इस्तेमाल आम तौर पर यीशु की वापसी के सम्बन्ध में किया जाता है (1 कुरिन्थियों 15:23; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19; 3:13; 4:15; 5:23; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1, 8क; याकूब 5:7, 8; 2 पतरस 1:16; 3:4, 12; 1 यूहन्ना 2:28)।

ये अभिव्यक्तियां और पवित्र शास्त्र में बार-बार इनका आना इस बात का आश्वासन है कि यीशु फिर आएगा। इनके साथ, ''उस दिन,'' ''प्रभु यीशु मसीह के दिन,'' और ''प्रभु यीशु के दिन'' जैसी अभिव्यक्तियां समय की उस अवस्था की बात है, जब वह दोबारा आएगा (देखें मत्ती 7:22; 1 कुरिन्थियों 1:8; 5:5; 2 कुरिन्थियों 1:14; फिलिप्पियों 1:6, 10; 2:16; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 थिस्सलुनीकियों 2:2; 2 तीमुथियुस 1:18;

4:8; 2 पतरस 3:10)। इन वाक्यांशों के संदर्भों से ही पता चल सकता है कि वे कब द्वितीय आगमन की ओर संकेत कर रहे होते हैं।

उसकी वापसी का समय

यीशु के जाने के बाद से ही, झूठे भविष्यवक्ताओं द्वारा उसकी वापसी का समय और तिथियां निर्धारित की जाती रही हैं (पढ़ें व्यवस्थाविवरण 18:20-22)। दी गई प्रसिद्ध तिथियां में से कुछ इस प्रकार हैं:

विलियम मिल्लर	22 अक्तूबर, 1843
चार्ल्स टेज़ रस्सल	अक्तूबर, 1914
जज जे. एफ़. रुदरफोर्ड	1928
हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्मस्ट्रॉन्ग	1972
यहोवा के गवाह	1975 का शरत्
हाल लिंडसे[1]	1995

यीशु की बात कि ''उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता'' (मत्ती 24:36) के बावजूद इन तिथियों की भविष्यवाणी की गई। उसका आना चोर के आने की तरह होगा (मत्ती 24:42-44; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 पतरस 3:10), जिसमें यह दिन अप्रत्याशित रूप से और बिना चेतावनी दिए आएगा। यीशु ने प्रेरितों को बताया था कि ''उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं'' (प्रेरितों 1:7)।

यद्यपि नये नियम में कोई तिथि नहीं दी गई, परन्तु इसमें यह भविष्यवाणी थी कि यीशु के लौटने से पहले कुछ बातों का होना आवश्यक है:

(1) उसके जाने और लौटने के बीच समय का अन्तर होना था (मत्ती 25:19; प्रेरितों 3:20, 21)।

(2) यहूदी और अन्यजातियों ने एक झुंड बन जाना था (यूहन्ना 10:16)।

(3) यरूशलेम गिराया जाना था (मत्ती 24:1, 2; मरकुस 13:1, 2; लूका 21:20-24)।

(4) विश्वास का त्याग होना था, और ''पाप का पुरुष'' प्रगट होना था (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-3)।

(5) लोगों ने ''अन्त के समयों में'' विश्वास को छोड़ देना था और बुराई बढ़ जानी थी (1 तीमुथियुस 4:1, 2; 2 तीमुथियुस 3:1-5)।

(6) इतना समय बीत जाना था कि लोग उसकी वापसी पर संदेह करने लगते (2 पतरस 3:3-9)।

(7) प्रकाशितवाक्य में वर्णित घटनाएं उसकी वापसी से पहले पूरी होनी थीं।

जहां तक हमें मालूम है, यीशु के आने से पहले होने वाली आवश्यक बातें हो चुकी हैं।

उसका आना कैसा होगा

नया नियम यीशु की वापसी के बारे में कई रोमांचक बातें बताता है। यदि वह हमारे जीते जी आ जाए, ...

तो हम यीशु को देखेंगे! (1 थिस्सलुनीकियों 4:16; प्रकाशितवाक्य 1:7)।

हम उसके पवित्र स्वर्गदूतों को देखेंगे! (मरकुस 8:38)।

हम तुरही की आवाज़ और महादूत का शब्द सुनेंगे! (यूहन्ना 5:28; 1 कुरिन्थियों 15:52; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।

हम उसे बादलों में,[2] धधकती हुई आग में, सामर्थ और महिमा के साथ आते देखेंगे! (प्रकाशितवाक्य 1:7; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7; लूका 21:27)।

कुछ लोगों ने यह सिखाया है कि यीशु की वापसी के समय मर चुके पवित्र लोग भी उसके साथ होंगे (यहूदा 14)। ''पवित्रों'' या ''पवित्र लोग'' यूनानी विशेषण *hagios* का अनुवाद है जिसे ''संत'' भी कहा जाता है। प्रश्न यह नहीं है कि ''क्या यीशु अपने *हेगियोस* के साथ आएगा?''-क्योंकि वह तो आएगा ही। प्रश्न यह है कि ''क्या *हेगियोस* 'पवित्र' लोगों को कहा गया है या उसके 'पवित्र' स्वर्गदूतों को?'' उसकी वापसी के समय उसके साथ आने वालों को हमेशा ''स्वर्गदूत'' (मत्ती 13:39-49; 16:27) या ''सामर्थी दूतों'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:7) या ''पवित्र दूत'' (मरकुस 8:38) ही कहा गया है। ''पवित्र लोग'' या ''संत'' जो उसके साथ आएंगे, वे मरे हुए धर्मी नहीं, बल्कि स्वर्गदूत ही होंगे। मरे हुए धर्मी उसके साथ नहीं आएंगे, बल्कि उसके आने पर उसके साथ मिलने के लिए मुर्दों में से जिलाए जाएंगे।

उसकी वापसी के समय होने वाली घटनाएं

यीशु की वापसी के समय, तेज़ी से एक के बाद एक घटनाएं घटित होंगी। पवित्र शास्त्र में यह रूपरेखा दी गई है: यीशु पृथ्वी पर दुष्टों और अविश्वासियों को ढूंढ़ेगा (लूका 17:26-30; 18:8)। सभी मृतक यीशु की आवाज़ सुनकर जी उठेंगे (यूहन्ना 5:28, 29; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। यह मृत्यु का अन्त होगा, जो अन्तिम शत्रु है (1 कुरिन्थियों 15:26, 55; प्रकाशितवाक्य 20:14)। वे सभी जो जीवित होंगे, पलक झपकते ही एक क्षण में बदल जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:51)। जीवित और जी उठे बादलों में यीशु के साथ मिलेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। पहला आकाश और पृथ्वी नष्ट किए जाएंगे (2 पतरस 3:10-12; मत्ती 24:35; प्रकाशितवाक्य 20:11)। शैतान का काम खत्म हो जाएगा और उसकी पीड़ा शुरू हो जाएगी (मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 20:10)। यीशु अपने सिंहासन पर बैठेगा और सब लोग न्याय के लिए उसके सामने खड़े किए जाएंगे (मत्ती 25:31, 32; यूहन्ना 5:22; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:1; प्रकाशितवाक्य 20:11)। यह वर्तमान प्रबन्ध खत्म हो जाएगा और सब वस्तुओं की बहाली होगी (1 कुरिन्थियों 15:24; प्रेरितों 3:21; इफिसियों 1:10)। न्याय का समय आरम्भ हो चुका होगा (प्रकाशितवाक्य 20:11-15), और ''उद्धार का दिन'' (2 कुरिन्थियों 6:1, 2) बीत चुका होगा। यीशु पृथ्वी की शक्तियों को खत्म करके राज्य को पिता के हाथ सौंप देगा (1

कुरिन्थियों 15:24)।

इस समय यीशु पूरे स्वर्ग और पृथ्वी पर राज्य करता है (मत्ती 28:18; 1 कुरिन्थियों 15:27)। वापस आने पर, संसार पर उसी का शासन समाप्त हो जाएगा। वह और पिता मिलकर उसी सम्बन्ध में राज करेंगे, जिसमें वे सृष्टि की रचना से पहले करते थे (यूहन्ना 17:5; 1 कुरिन्थियों 15:28)।

हम में से हर किसी को उसके आने की इन महान घटनाओं के लिए तैयार होना चाहिए। जिस प्रकार हमारे लिए जगह तैयार करने की यीशु की प्रतिज्ञा पूरी हुई, वैसे ही उसके वापस आने की प्रतिज्ञा भी पूरी होगी (यूहन्ना 14:3)। हमें उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा करते हुए, (1 कुरिन्थियों 1:7; 1 थिस्सलुनीकियों 1:10; याकूब 5:7), अन्त तक उसमें बने रहकर (मत्ती 25:1-13), और इसके लिए जो भी तैयारी करनी आवश्यक हो, वह करते हुए (मत्ती 24:44) उसके आने की राह देखनी चाहिए (2 पतरस 3:12)। उसके आने को प्रिय जानने वाले (2 तीमुथियुस 4:8) उसके आने पर आनन्दित होंगे (1 पतरस 4:13) परन्तु उसकी आज्ञा मानने से इनकार करने वाले भय से भरे और शोकित होंगे (इब्रानियों 10:31; प्रकाशितवाक्य 1:7)।

सारांश

यीशु का दूसरी बार आना मानवीय इतिहास का चरम होगा। यीशु के आने के समय और उसके तरीके पर कइयों ने कई गलत निष्कर्ष निकाले हैं, जिस कारण हमें वही सिखाने के लिए तैयार रहना चाहिए, जो उस महान दिन के बारे में बाइबल कहती है और यह कि उसके लिए कैसे तैयार रहा जा सकता है। सबसे बढ़कर, हमें उसके आने के लिए तैयार रहना आवश्यक है। यदि हम तैयार हैं, तो तैयार होने का हर प्रयास लाभदायक होगा। यदि हम तैयार नहीं हैं, तो संसार की हर प्राप्ति, सफलता और सम्मान जो हमें मिला है, हमारी सबसे बड़ी असफलता मानी जाएगी।

टिप्पणी

[1]मिल्लर एक बैपटिस्ट प्रचारक था और यीशु की 1844 की वापसी पर विश्वास करने वाले एक धार्मिक गुट का अगुआ था। इस ग्रुप को छोड़ जाने वाले कुछ लोगों ने एक अलग गुट बना लिया जिन्हें आज सैवंथ डे एडवेंटिस्ट चर्च के नाम से जाना जाता है। रस्सल इस लहर को संगठित करने वाला और पहला प्रधान बना, जो जहोवा'स विटनेसस (या यहोवा के गवाह) के नाम से प्रसिद्ध हुई। रुदरफोर्ड नये नाम वाले संगठन ''जहोवा'स विटनेसस'' का दूसरा प्रधान बना। आर्म्मस्ट्रॉन्ग रेडियो चर्च ऑफ़ गॉड नामक ग्रुप का संस्थापक और अगुआ था। लिंडले *द लेट ग्रेट प्लेनट अर्थ* का लेखक है। [2]वह वैसे ही वापस आएगा जैसे गया था (प्रेरितों 1:11)।